

दो शब्द

वर्तमान काल में हिन्दी-भाषा का साहित्य-क्षेत्र उत्तरोत्तर
 अभिवृद्धि करता जा रहा है और भविष्य में इससे भी
 अधिक उन्नति कर सकेगा ऐसी सम्भावना है। किसी भी जाति
 अथवा देश के लिए उसका साहित्य उसकी सभ्यता, सचरित्रता,
 उन्नतावस्था तथा आदर्श का मूल आधार तो होगा ही है, किन्तु
 साथ ही उसका अस्तित्व भी इसी के आधार पर अवलम्बित
 होता है। अब विद्यार्थियों ने अभिरुचि उत्पन्न करने के निमित्त
 यह निश्चय आवश्यक है कि उन्हें पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त
 हिन्दी के प्रकाष्ठ विद्वानों के अर्पित गद्यांश पढ़ाये जायें, क्योंकि
 साहित्य का परिज्ञान अर्पित लेखों द्वारा मस्तिष्क परिभाषित
 करने से ही पूर्णता को प्राप्त हो सकता है। अंगरेजी आदि अन्य
 भाषाओं में इस विषय की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है,
 किन्तु हिन्दी भाषा के—दो चार के अतिरिक्त—अन्य विद्वानों ने
 इस ओर अभी तक लेखनों नहीं उठाई हैं। इसी कारण विद्यार्थियों
 ने साहित्योन्नति का अभाव पाया जाता है। जो विद्यार्थी स्वयं
 स्वाध्यायशील हैं वे तो निःसन्देह पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा
 अन्य स्थानों में प्रत्येक बात का सामयिक ज्ञान प्राप्त करते रहते
 हैं, जिससे उनकी बुद्धि का उत्तम विकास हो जाता है। परन्तु
 ऐसे विद्यार्थी पक्षीस प्रविशत से अधिक नहीं होते; और जो हैं भी,

को पढ़कर उनका उत्तर अल्प बुद्धि व्यायाम से ही दे सकते हैं। प्रत्येक अभ्यास के प्रश्न अभ्यासार्थ निर्दिष्ट गद्य में से दिये गये हैं। इन प्रश्नों का उत्तर संक्षेपतः देना होता है, परन्तु कहीं-कहीं विद्यार्थियों को अपनी बुद्धि से भी काम लेना चाहिये। प्रश्नों के उत्तर देने में विद्यार्थियों की मानसिक-शक्ति के साथ स्मरण-शक्ति की भी उत्तरोत्तर उन्नति होती है। स्मरण-शक्ति से उत्तर देने में बहुत कुछ सहायता मिलती है। यहाँ तक कि स्मरण-शक्ति ही योग्यता का मुख्य साधन है। इसलिए विद्यार्थियों को गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर भली-भाँति स्पष्ट करना चाहिये।

यथा—श्री शुकदेव मुनि बोले, कि महाराज ! इतनी घात के सुनते ही श्रीकृष्ण जी ने उनसे कहा, कि सुनो, जिस पुर से साधु-जन निकल जाते हैं, वहाँ आपसे आप आपत्काल दरिद्र दुःख आता है। जब तें अक्रूर जी इस नगर से गये हैं तभी तें यह गति भइ। जहाँ रहत हैं साधु सत्यवादी और हरिदास, वहाँ होता है अशुभ अकाल विपत्ति का नाश।

प्रश्न—

१—आपत्ति में दुःख कहाँ आता है ?

२—विपत्ति का नाश किस स्थान पर होता है ?

उत्तर—

१—जिस पुर को साधुजन छोड़ जाते हैं, वहाँ आप में आप ही दम आने लगता है।

व्याख्या (Explanation) करने में विद्यार्थीगण बहुधा बड़ी गूढ़ियों किया करते हैं। इसका कारण यह है कि वह व्याख्या का अर्थ ही नहीं जानते। व्याख्या में विस्तृत अर्थ—जिसमें पूर्वापर-प्रसंग की सम्पूर्ण घातों का उल्लेख तथा वाक्यान्तर्गत रहस्य का पूर्ण विवेचन रहता है। व्याख्या योग्यता के अनुसार कई प्रकार में की जा सकती है।

उदाहरण—“आज जो समाज सुखी और समृद्धिशाली बना है, सम्भव है कल उसे औरों की जूतियाँ उठानी पड़ें; इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है।”

व्याख्या—“इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि हमेशा एक-सी दशा किसी की भी नहीं रहती है। यदि इस समय कोई देश, जाति या समाज, धन और सुख से पूर्ण अर्थान् स्वतन्त्र है, तो यह निश्चय नहीं है कि हमेशा वह स्वतन्त्र ही बना रहे, सम्भव है कल दूसरी जातियों का दास बनना पड़े।”

बहुधा देखा गया है कि विद्यार्थीगण बिना अर्थ समझे हुए ही कठिन शब्दों, मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग वाक्यों में कर दिया करते हैं। जैसे कि कहावत है—“ऊँट किस करवट बैठता है” इसका अर्थ बिना समझे कोई कहे कि—आज वर्षा बड़े जोर से हुई। मैं स्कूल पढ़ने नहीं गया। कल देखें स्कूल में “ऊँट किस करवट बैठे”। इसी प्रकार से बिना अर्थ समझे प्रयोग करने से कोई लाभ नहीं होता। इससे अर्थ का अनर्थ हो

६—वरुन सुन्दर और स्पष्ट हो तथा समय का पूर्ण ध्यान रक्खा जाय ।

७—विषय सम्बन्धी और विशेष बातें—यथा—किसी कवि का उद्धरण और अनुभव इत्यादि ।

८—छात्रान्त सरल तथा यथा सम्भव छोटे ऐतिहासिक उदाहरण भी हों ।

९—निबन्ध की समानि शिक्षा पूर्ण हो ।

१०—अधिक अलंकारिक भाषा का प्रयोग न होना चाहिये ।

११—शब्दों तथा विचारों में पुनरावृत्ति न हो ।

१२—अप्रसिद्ध कवियों की उक्तियों को उद्धृत न करना चाहिये ।

१३—प्रबन्ध में एक शैली होनी चाहिये ।

१४—शब्दों के अनुस्वार (') और अनुनासिक (~) पर पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिये इत्यादि ।

इस पुस्तक में मुख्य-मुख्य ६० निबन्धों की सूची दी गई है और साथ ही साथ दो निबन्धों को अंकित करके लिखने का ढंग बतलाया गया है ताकि विद्यार्थीगण लाभ उठा सकें ।

रस, अलंकार तथा छंद

रस और अलंकारों का रचना के साथ घनिष्ठ सम्पर्क है । रस और अलंकार के ज्ञान बिना रचना में सफरवा नहीं आ सकती । इस पुस्तक में रस की परिभाषा, भेद और प्रत्येक रस के भाव, विभक्त अलम्बन, उदात्त तथा मंदारों भाव सौदाहरण

स्पष्ट समझाये गये हैं । मुख्य-मुख्य अलंकारों का ज्ञान भी मोदाहरण स्पष्ट कराया गया है तथा छन्दों का भी जो कि विचारियों के कर्म में निपुण है मनी-भोजि उल्लेख किया गया है ।

इसमें सन्देह नहीं, रस, अलंकार तथा छन्दों का विषय बड़ा विस्तृत, जटिल और गम्भीर है, परन्तु इतने पर भी इन्टरमीडियेट कक्षाओं के छात्रों के लिये उपयोगी बातों का विवेचन पुस्तक में स्थित है, जिसमें उक्त विषयों की बहुत सी श्रुतियाँ दूर हो सकेंगी ।

इस पुस्तक में लगभग सभी प्रकार के लेखों की शैलियों को प्रकाशित किया है । अन्त में समाश्लेषना तथा आश्लेषना के प्रभाव का वर्णन ध्यान रखना है ।

आगे है, प्रस्तुत पुस्तक में छात्रों का अध्ययन लाभ होगा । इस पुस्तक के दो भाग हैं । इन भागों में प्रथम १५ और ५ तथा दूसरा ५ और ५ ' भागों के लिये है । इस पुस्तक के प्रत्येक में इस कमी तक संकलना प्रायः है । इसका निर्माण में अध्ययनरत वरु और विद्यार्थी ही काम करने में भाग्य ही मान, इस पुस्तक में छात्रों के अध्ययन आसानी है । इनके लेखों में हमने अनेक गद्यों का अन्तर्गुप्त का अन्वेषण किया है ।

सर्व प्रथम

वर्ष १९१३

}

—सम्पादक



For Class XI

० श्री: ०

हिन्दी-पीयूष

(अपठित)

(१)

मनुष्य-जाति की दो मुख्य स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ हैं, एक आत्मोन्नति की, दूसरी आत्म रक्षा की। इन्हीं दो प्रवृत्तियों के द्वन्द्व-युद्ध में मनुष्य-जाति का इतिहास घना है। जीवन की स्वच्छन्द गति के लिये यह आवश्यक है कि ये दोनों साम्यावस्था को प्राप्त हों। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह ग्रहण करने की इच्छा करता रहता है। ग्रहण करने के बाद वह उसकी रक्षा के लिये चेष्टा करता रहता है। इसी प्रवृत्ति के घसीभूत हो वह जिसे ग्रहण करता है उसे वह दृढ़ता पूर्वक पकड़ लेता है और उसे आत्मसात् कर लेता है। वह उसी में आवद्ध हो जाता है। इसी के साथ एक दूसरी प्रवृत्ति है आत्मोन्नति की। यह

पर उन मनीषियों की महावाक्यों के गूढ़ अर्थ के अर्थ को मनन करना चाहिये और यद्यपि उन पर हृदय में स्थित होने का प्रयत्न करना चाहिये, किन्तु मझ के लिये सुरभी हो जाय। वा ये कहिये कि राज्यों के जगज्ज राजन्य में केवल कोय भरने वाले राजों के साथ दुष्परी लगना उचित नहीं है पर उन अनुपम और अद्वय गत के प्रान करने का प्रयत्न करना चाहिये, किन्तु उन अज्ञ के साथ बहुत से मझ के लिये हृदय हो जाय।

Questions

- 1—Explain the uses of Blackie and Chonakya about a true book
- 2—Read the above and explain fully the underlined lines.
- 3—Explain fully the parts underlined.
- 4—Pick out the Alankars in the above passage

(३)

हे मन के महामोक्षि ! तुझे नमस्कार है। उन परमप्र
माण बात के मिलने में परम कारणभूत ! तुझे प्रणम है।
 मझ की मृष्टि की भी लज्जित वाली भावनाओं की विरल मृष्टि !
 तुझे धन्यवाद है। अनुप्यों के विषयों को खबर बनाने करने
 हारी तुझे प्रणम है। विशुद्धिस्तु कवियों के यश को फैलाने
वाली तुझे नमस्कार है। अमन्य कोटि मझाद की कथा कहने

हारी ! तुम्हें सहस्र धन्यवाद है । दुःख रूपी प्रचण्ड बात से उद्विग्न मानस को धैर्य देने वाली ! तुम्हें अनेक बार प्रणाम है ।

Questions

- 1—Explain the parts underlined.
- 2—Pick out the Alankars in the above
- 3—Point out the Ras (रस) in the above passage.
- 4—What is the difference between समस्कार and प्रणाम or सृष्टि and प्रकाश ?

(४)

बातचीत करने समय भाषा की उपयोगिता पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है । कई लोग साधारण पढ़े-लिखे लोगों के साथ बातचीत करने में 'विचार स्वातंत्र्य', 'व्यक्तिगत आक्षेप', 'वैयक्तिक धारणा' आदि शब्दों का उपयोग करते हैं, जो साधारण पढ़े-लिखे लोगों की समझ में नहीं आ सकते । इसी प्रकार पण्डितों के समक्ष में मनुष्य के लिये 'मानस', माना के लिये 'महतागी', पिता के लिये 'बाप' और भोजन के लिये 'भ्याना' कहना असंगत है । मातृभाषा में बातचीत करने समय बीच-बीच में अँगरेजी शब्दों को मिला कर एक प्रकार की मिश्रित भाषा बोलने की जो दूषित प्रथा है, उसका तो सर्वथा त्याग दिया जाना चाहिये । भारतवर्ष में इस 'मिश्रित सम्भाषण प्रथा' का तो इतना प्रचार है कि कदाचित् ही कोई प्रान्त इसके आधिपत्य में पड़ा हो । इसी प्रकार मातृभाषा में ऐसे प्रान्तीय शब्द भी न लाये

था, यहाँ आठों पहर नौना बरसता था । गोंमती के किनारे द्वातर-
मन्दिर, शशिमठल आदि को देव आँगनों में बनाबोध होती थी ।
नादिरशाह के आज्ञानुरूप के समय मोहम्मद शाही ने दिलों की
जो रौनक थी, वह फिर कभी वापस को दिगवाई देगी । जिन समय
महमूद ने हिन्दुस्तान की ओर यात्रा की उस समय पूरु आदि के
कारण हिन्दुओं की राजनीतिक शक्ति बिल्कुल धीरे हो चुकी
थी । पर मधुरा, सोमनाथ आदि तीर्थ स्थानों का ठाढ़-ठाढ़ और
वैभव वर्तन के बाहर था । जिस समय बादशाह देवशाहर
अपने विशाल भवन में बैठा हुआ दीवार पर अपने भावलेख को
पढ़ रहा था और विद्वानों पारसियों की विजय-हुन्दुभी का तुमुल
शब्द सुन रहा था उस समय बाहुल की शोभा अपनी पराकाष्ठा
को पहुँच चुकी थी ।

Questions

- 1—Write short notes on नादिरशाह, बेलरावर and मोहम्मद-
शाह ।
- 2—What was the cause of Mahmud's success in India?
- 3—Explain the parts underlined.
- 4—Point out the Atankars in the above.
- 5—Explain the importance of मधुरा, सोमनाथ, लखनऊ
and बाहुल ।

(३)

रत्नचर्चला ने गोपिकाओं ने भगवान् से तीन प्रश्न किये हैं
उनमें उन्होंने तीन तरह का मार्ग प्रेक्ष का दिखाया है । एक तो

- 1—Name the remarkable poets of the 19th century with their main works.
 2—What are the main subjects of poetry in the 20th century.
 3—Why poets like these are called modern poets.

(६)

प्रकृति के राज्य में समार के नशा न मान कर जितने
आश्चर्यकर विषय प्रत्यक्ष किये हैं, उनमें श्रीकृष्ण का रसनाना
मालिह महम्म मज्ज-चालाखी के साथ एक ही कृष्ण का एक ही
समय रस-कौतुहालाप, सम्भोग, शृङ्गार काड़ा सबमें प्राश्न
प्रश्नयकर है। साधारण बुद्धि का तात्पर्य है क्या, क्या
एक विज्ञान-गर्वोज्ज्वल संसार की समझ में किमो तरह भी वह
समय सत्य की सयाँदा प्राप्त कर सकना है ? किमो गूढ़ सत्य
को समझ कर उड़ा देने में विशेष दिक्कत नहीं पड़ती। पर उस
समय जाति करने में बहुत बड़े अनुभव का सामना करना
पड़ता है। जितने ही जीवन की कठोर प्रतिज्ञा नहीं पड़ा
मनुष्य, प्रयत्न का प्रयाद धारण किया है तबाम्बना
जितने ही नहीं कहाया है—“जन्म काँटि जन उमर हमारी।
मृत्यु काँटि हमारी।” तभी यहाँ के लोग बड़-म बड़
कहते हैं—“नकार कर सक है। अगर आनकन के
नहीं करे तो फिर न उत कर सकत है। एक एक आनकन
के नकार के अनकनक साष्टीं बनमान है तो उन्म एक

उस तथ्य के समझने के लिये ज्यामिति के अनुमान की तरह एक अवलम्ब ग्रहण कर लेना अयुक्त न होगा और यह अवलम्ब यह है कि जब कि एक प्राणी में अनेक सृष्टियाँ वर्तमान हैं तो आयों के कथनानुसार एक ही दृष्टा या देखने वाले के अन्दर यह समान विश्व रह सकता है। अवश्य अनुमान के पश्चात् इस इतने बड़े वाक्य का प्रमाण नहीं हो सकता। कारण, जब एक ही दृष्टा के अन्दर सब कुछ चला गया, तब प्रमाण के लिये उसके भीतर की जगह निकाल लेना जिस पर कि ठहर कर प्रमाण किया जायगा, अन्याय होगा। इसीलिये यहाँ इसका प्रमाण हुआ भी नहीं।

Questions

- 1—Differentiate between संसार and विश्व।
- 2—Explain fully the sentences and words underlined.
- 3—Explain the author's main idea conveyed in the above passage.
- 4—Point out the sustainability of the use of 'मगीरथप्रयत्न'।
- 5—Comment on the fact "सत्य को सत्य सिद्ध करने में बहुत बड़े अनुभव का सामना करना पड़ता है।"
- 6—Point out the रस in the above passage.

(१०)

जो धीर है, जो उद्वेग रहित है, वही इस संसार में कुछ कर सकता है। जो लोहे की चादर की भाँति जरा ही से गर्म और जग ही में ठण्डे हो जाते हैं, उनके किये क्या हो सकता है ? समल है जो यादल गरजते हैं, वे बरसने नहीं। धीर मनुष्य का

उन्नति मोक्षान् परम्परा पर नहीं चढ़ सकता ।

Questions

- 1—Pick up the संज्ञाकार in the above passage and mark them
- 2—Explain fully the underlined in the above passage
- 3—Write notes on ईसा ।
- 4—Explain fully "आत्मवत् से ही उनके काम की सिद्धि होती है।"
- 5—What is संज्ञाकारण ? Write an essay on it.
- 6—Point out प्रत्यय in the following—
निर्गन्ध, संज्ञाकारण ।

(१२)

स्वार्थ-न्याय बीरमा का मन में बड़ा भूषण है । काम भाव प्रदल करके यदि कोई विवाह-अन्धन में पड़े तो उसके इस कर्मस्थ में बूढ़ न बूढ़ बनि अवश्य पहुँचती । बीरमा हनुमान ने जब भगवान का सामान्य प्रदल दिया तब आत्म न्याय का मेगा अनुभव उदाहरण दिखाया कि जीवन पर्यन्त कभी विवाह ही न दिया । इस भगवान ने उत्तम काल यह केसा कि इसकी प्रता इनके द्वारा मीना प्रदल के द्वारा इन्हे उत्तम अनुभव आत्म में गिरा हुआ समझने है, तब इन्होंने प्रार्थना अनुभव की मीना सक का न्याय करके अपने प्रता इन्त बने ईश कर्मस्थ को द्वारा में नहीं प्रता है । काम भाव में भी अपने दिना की बे मन की आत्म प्रदल सक में इन्होंने निर प्रता मीना दिया ।

आपने चावजीवन स्वार्थत्याग और कर्त्तव्य-पालन का ऊँचा आदर्श
दिखाया मानों वे सद्गुरु कर्त्तव्य होकर पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए थे।

Questions

- 1—Give a brief substance of the passage in your own Hindi.
- 2—Explain fully the sentences underlined.
- 3—Pick out the कर्त्तव्य in the above and name them.
- 4—Why did Ram exile Sita ?
- 5—Point out प्रत्यय in दासत्व.
- 6—Why Hanuman did not marry throughout his life ?
- 7—‘The marriage of one—a slave—ends in disgust’—explain with reference to the context.
- 8—Write a short essay on “स्वार्थ त्याग धीरता का सब से बड़ा भूषण है” ।

(१३)

कबीर का एकेश्वर हिन्दू जनता को कुछ समय तक भले ही रुचा हो, किन्तु कालान्तर में उसके प्रति उसको अरुचि हो गई। कबीर रामानन्द के शिष्य और वैष्णव थे। उन्होंने अपनी कविताओं में राग का गुण गान करने का प्रयत्न किया था, किन्तु वह राग अनन्त था, अपरमित था और इसी कारण जन-साधारण की बुद्धि-शक्ति से परे हो जाता था। ऐसी स्थिति में इस निराकार-वाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया अनिवार्य थी। बौद्धधर्म का तो विक्रम का नववीं शताब्दी में प्रायः तीव्र हो गया था, किन्तु उसने

ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले बहुतोंरे विकृत होते हैं, क्योंकि वे आहार-विहार तथा छटि इत्यादि में अ-ब्रह्मचारी को तरह चर्चा करते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं। यह कोशिश वैसी ही है जैसी कि गर्मी के मौसम में नदी के मौसम का अनुभव करने की कोशिश होती है। मयमी और स्वच्छन्द के तथा भोगी और त्यागी के जीवन में भेद अवश्य होना चाहिये। साम्य तो निरुक्त ऊपर ही ऊपर रहता है। भेद स्पष्ट रूप में दिखाई देना चाहिये। आँख से दोनों काम लेने हैं, परन्तु ब्रह्मचारी देव दर्शन करता है भोगी नाटक नितेना में लीन रहता है। काम का उपयोग दोनों करते हैं; परन्तु एक ईश्वर भजन सुनता है और दूसरा पिला समय गाँवों को सुनने में आनन्द नमता है। जागरण दोनों करते हैं, परन्तु एक तो जागृत अवस्था में अपने हृदय मन्दिर में विराजित राम की आराधना करता है, दूसरा नाच-रंग की धुन में सोने की याद भूय जाता है। भोजन दोनों करते हैं; परन्तु एक शरीर-रूपी नौर्य-मेघ की रत्नानात्र के लिये कोठे में अन्न ढल लेता है और दूसरा स्वाद के लिये देह में अनेक चीजों को भर कर उसे दुर्गन्धित बनाता है। इन प्रकार दोनों के आचार विचार में भेद रहा ही करता है और यह अवसर दिन बढ़ता है घटता नहीं।

Questions

1—हो ४ २ ० १५ ११ 'ब्रह्मचर्य' ।

- 2—Explain the above passage in a short sentence of your own
- 3—Pick out the अलंकार from the above passage and name them
- 4—Point out the merits and demerits of the cinema
- 5—What is the difference between भोगी and ब्रह्मचारी ?
- 6—Explain the underlined

(१५)

संसार का विषय है कि भारतवर्ष में नूतन युग का प्रादुर्भाव हो रहा है। अभी तक हम लोगों का अधिकांश ध्यान अपनी प्राचीन परम्परा की रक्षा करने की ही ओर रहा था। भूत और वर्तमान में आगे हम लोगों ने क्रम नहीं बढ़ाया था किन्तु अब कुछ दिनों में हम अपने उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न देखने लगे हैं, उन नियमों की खोज में मलग्न हैं जिनके आधार पर उनका निर्माण होगा। एक विद्वान ने अति सक्षेप में उन्नतिशील राष्ट्रों की प्रगति का वर्णन किया है। उसका कहना है कि वे भूत काल में निकल कर वर्तमान मार्ग में भविष्य की ओर बढ़ते रहते हैं। भारतवर्ष की अवस्था के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है। तात्पर्य यह है कि वह अपने चिरकालीन प्रमाद को छोड़ कर उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। अपनी प्राचीन परम्परा और सभ्यता की शोध के प्रकाश में तज्जनित शक्ति के आधार पर वह अपने समुज्ज्वल भविष्य की तैयारी कर रहा है। जो देश किसी प्रकार के नवीन तथ्य नहीं खोज सकता उसके

लिये जीना न जीना बराबर है। नहीं, वह जीवित ही नहीं रह सकता, क्योंकि प्रगति का ही नाम जीवन है।

Questions

- 1—What is the propaganda of "प्रगति का ही नाम जीवन है"?
- 2—What is the meaning of "भारतवर्ष में नूतन युग का प्रादुर्भाव हो रहा है"?
- 3—Paraphrase the words and sentences underlined.
- 4—Explain in simple Hindi the above passage.
- 5—Is it beneficial to enter into the new era from that of the old.
- 6—Write explanatory notes on following :—
उत्कृष्ट भविष्य, प्रादुर्भाव, चिरकालीन प्रभाव, तत्कालीन शक्ति, काव्य प्रगति ।

(१६)

मीरा हिन्दू मन्त्रावली की मंत्र में ईश्वरी शक्ति की परकीया लक्षित है—वह परकीया लक्षिका जिसका किमी भी मादित्य को गर्व हो सकता है। हिन्दू-मन्त्रावली के व्यवस्थाकार ऋषियों का कथन है कि मारी के लिए उनका पति ही परमेश्वर है। उनका यह आदेश हमारे लिए नहीं था कि पुण्य होने के कारण वे भी स्त्रियों पर पुण्य की मन्त्रावली रहने देने के लिए व्यग्र थे और इस कारण स्त्रियों को धर्मोपदेश करने के लिए उन्होंने यह धर्मोपदेश करने के लिए तैयार हो नहीं मन्त्रावली के आरा-
धन में अन्तर्भाव होने वाले मन्त्रावली के मन्त्रोपदेश के प्रति
गुरुत्व होने स्वयं अन्तर्भाव करने हैं अन्तः अन्तः मन्त्रावली

नारांश है। इसी गुरुत्व के कारण वस्तुयें पृथ्वी की ओर गिरती हैं और वह भी सीधी रेखा में। हम जान का भी अनुभव होता रहता है कि गुरुत्व द्रव्यमान पर निर्भर है। यदि एक ही पदार्थ के दो टुकड़े लिए जायें जिनमें एक दूसरे का दूना हो, तो इस दूसरे का घनत्व भी दूना प्रतीत होगा। दूरी पर गुरुत्व का निर्भर होना भी एक अनुभवसिद्ध बात है। किसी वस्तु को यदि हम यहाँ तोल लें और फिर उसे बहुत ऊँचे गुब्बारे में ले जाकर तोलें तो वहाँ उनका तोल कम निकलेगा। किसी गेंद को ऊपर उछालिये, वह जब नीचे गिरने लगे तो ध्यान देकर देखिये। वह स्पष्ट प्रतीत होगा कि वह ज्यों-ज्यों नीचे उतरती है उसका वेग बढ़ता जाता है, जिससे ज्ञात होता है कि ज्यों ज्यों वह नीचे आती है उस पर द्रिचाव बढ़ता जाता है पानी की घूँटें पहले धीरे-धीरे गिरती हैं, फिर भूतल के निकट आते-आते बड़े वेग से गिरने लगती हैं पाठक यदि विचार करेंगे तो वे स्वयं देखेंगे कि कितने प्रभों के उत्तर न्यूटन के स्थापित किये हुए इस सिद्धान्त से हल हो जाते हैं।

Questions

- 1—Who was Newton? What was his conception?
- 2—Who was the first to discover earth's attraction? Write a short note about him.
- What will be the effect on the weight of a body when taken higher at 100 m the sea-level? Will there be any change in the Mass of the body?

ने अपने आविष्कार समझे हुआ था वे साधारण छात्रों को ज्ञात, पुरानी और पिष्टपेषित बातें हैं। विद्या के प्रत्येक विभाग में यही दशा उत्पत्ती होती है जो पड़ती नहीं। मनुष्य की अन्वेषणा और विचार परम्परा ज्ञान को चिन्म सीमा तक पहुँच चुकी है उसकी उसे स्मरण नहीं रहती। उनके लिये उनके पूर्व का काल अन्धकारमय है; न जाने कितने लोग हो गये, कैसे-कैसे विचार कर गये, पर उसे क्या? वह जो मानने देखा है वही जानता है, और शिक्षा के प्रभाव के कारण वह अन्धों तरह देख भी नहीं सकता।

Questions

- 1—What is meant by 'स्मरण' ? What are its various advantages ?
- 2—Explain the parts underlined.
- 3—Differentiate between विचार and मन।
- 4—Point out clearly the difference between 'आविष्कार' and 'अन्वेषण' and give a clear example of each.
- 5—What underlying idea does the author want to convey through the story ?
- 6—Comment on 'मनुष्य परम्परा के विज्ञान का एक प्रधान स्रोत है'।

(१६)

दिनों सन्तुष्टि की उत्पत्ति की सृष्टि करने के लिये जब हम अपनी हाँस मृदुलता को देखते हैं, तब हमारे दिव्यमूर्ति देना है कि

- 3—Point out the appropriateness of the use of the words 'मैं' and 'दो' ।
- 4—Explain at length the parts underlined.
- 5—Pick up the Alankars and name them.
- 6—What is meant by 'अनन्य' ?
- 7—Give the अनन्य of तैयार, अनी, आचार्य, परिच्छेद, and प्रान्त ।

(२०)

रामानन्दी मन्त्रदाय के मन्त्रों के विचारों में एक दूसरे से जो थोड़ा बहुत भेद इन समय दीखता है वह आगे जाकर और भी बढ़ जाता है । उदाहरणार्थ देखिये, तुलसीदास जी और कबीर के विचारों में कितना भेद है । गुनाई जी अवतार के मानने वाले और नगुरा ब्रह्म की उपासना के प्रचारक हैं, परन्तु कबीर जी मूर्ति-पूजा और अवतार का बेशर्ह खंडन करते हैं ! तुलसीदासजी धर्म-मथ से गिरती हुई हिन्दू जाति की नाव को नाकार भक्ति के ढाँड़ में खेकर किनारे लगाना चाहते हैं, कबीर संनार के धर्मों में से ढोंग को दूर करके निर्गुण ब्रह्म के मानने मयको एक किया चाहते हैं जिससे न तो नाव में बौझान रह जाय और न नर्वनाश की नदी में उस नाव को डूबा लेने के योग्य गहराई । कबीर बड़े भारी मुधारक हुए हैं । उन्होंने सब बातें निदरपन के साथ नाक-नाक कही हैं । घट-घट व्यापी ब्रह्म को मूर्तियों में पूजना उनकी समझ में नृत्तवा था !

पहली विद्या—‘तू तो ज्ञान छोटने लगती है और ऐसे रूखी बन जानी है कि दया का लेश भी छू नहीं जाता। ऐव, वह प्यास से एक आदत तड़फ रहा है। चल, उसे नदी का उप पिला कर मृत करें।

दूसरी विद्या—“ठहर, देव ! वह कौन है ? अरे यह तो जयचन्द्र ही है। सखी, तू भी अन्तरिक्ष में हो जा और मैं भी अन्तरिक्ष होकर इसमें कुछ प्रायश्चित्त कराया चाहती हूँ। उम्मी और चले।”

Questions

- 1—What will be the effect on Indians by the abolition of ‘प्रतिहिमा’
- 2—Who was Janchand ? Describe some historical event connected with him.
- 3—Explain at length the parts underlined
- 4—Explain clearly —‘बेमिर पैर की चानें’, ‘ज्ञान छोटने लगी’, ‘रूखी बन जाना’, ‘दया का लेश न होना’ ।
- 5—Pick up the ‘Alankars’ in the above and name them
- 6—Can the above passage be termed ‘नाटक गद्यकाव्य’ ? If so, why ?
- 7—Give the antonyms of दया, शत्रु, अपमान, ज्ञान and मृत ।

(२४)

कवि कौन है ? कवि सृष्टि के मौन्दर्य का मर्मज्ञ है। वह एक ऐसा यन्त्र है, जिसके द्वारा सृष्टि का मौन्दर्य देखा जाता है।

कवि सौन्दर्य का उपभोग करता है और जब उन्मत्त हो जाता है,
तब उसके प्रलाप रूप में उसकी उन्मत्तता का प्रसाद स-हृदय-
जनों को कुछ मिल जाता है। वह प्रलाप ही काव्य है। तत्ववेत्ता
 और कवि में अन्तर है। तत्ववेत्ता भस्तिष्क का निवासी है।
और कवि हृदय का। हृदय त्रिगुणात्मक सृष्टि का केन्द्र है।
कवि उसी केन्द्र में स्थित होकर सृष्टि का निरीक्षण करता है।
 हृदय मनुष्य मात्र के हैं पर कुछ तो हृदय के मर्म को समझते
 ही नहीं, कुछ समझते हैं, पर उनकी वाणी में इतनी शक्ति नहीं
होती कि वे उसे प्रकट कर सकें। कवि हृदय की बातें समझता
 भी है और उसे कह भी सकता है। साधारणजन और कवि में
 यही अन्तर है !

Questions

- 1—Define 'A poet' and point out clearly the difference between कवि and तत्ववेत्ता ।
- 2—Explain clearly the difference between an ordinary man and a poet.
- 3—Explain at length the parts underlined.
- 4—Find the प्रत्यय in उन्मत्ता, निरीक्षण ।
- 5—Comment on 'कवि सृष्टि के सौन्दर्य का मर्मज्ञ है' ।
- 6—Give the synonyms of सौन्दर्य, हृदय, मर्म, and वाणी ।

(२५)

सब जातियों का स्वाभाविक आदर्श एक नहीं है। इसके लिए शोभ होना या पड़ताना बेकार और बे मतलब है। भारत-
 हि० पी० ३

गिराया बस क्यों तूने विधाता ।
सहा यह क्लेश अचला से न जाता ॥
मिटा दे वेग यह दुखड़ा हमारा ।
दिखा दे फिर वही मुखड़ा हमारा ॥

Questions

- 1—Pick up the अलंकार in the above.
- 2—Explain the above verses in your own simple Hindi.
- 3—Name the रस of the above stanza.
- 4—Name the उद्दीपन and आलंबन in the above.
- 5—On what occasion this poem has been cited ?
- 6—In which of the three अवधी, प्रज, or सद्दीबोली the above stanza is written ?

(२७)

तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये ।
भुके कूल सौ जल परसन हित मनहु सुहाये ॥
किधौं मुकुर मे लखत, उभाकि मय निज-निज सोभा ।
कै प्रनवत जल जानि, परम पावन फल-लोभा ॥
मनु आतप बारन तीरको, मिमिट नयै छाये रहन ।
कै हरि सेवा हित न रहे, निर्गन्ध नैन मन भुग्य लहन ॥

Questions

- 1—Name the छन्द of the above.
- 2—Pick up the अलंकार in the above and name them.

पापी एक जात हुतौ गंगा के अन्हाइवे कौ,
 तासों कहै कोऊ एक अधम अमान में ।
 जाहु जनि पंथी ! उत विपति विशेष होति,
 मिलैगो महान कालकूट खान-पान में ॥
 कहै 'पदमाकर' भुजंगन बँधैंगे अंग,
 संग नैं सुभारी भूत चलैंगे मसान में ।
 कमर कसैंगे गज-खाल ततकाल विन,
 अंबर फिरैंगो नू दिगंबर दिसान में ॥

Questions

- 1—Explain fully the meaning of the above.
- 2—Point out the अलंकार in the above stanza.
- 3—Name the छन्द in the above.
- 4—What भाव is predominant in the above passage.
- 5—In which of the three अक्षरी, मत्त or खड़ी बोली the above stanza is written.

तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान ।

छूटि गये कैसे जन जीवहि ज्यों प्राणी विनु प्रान ॥
 जैसे मगन नाद वन मारंग बधै अधिक तनु धान ।
 ज्यौ चितवै ममि आर चकोरी देखत ही मृग्य मान ॥
 जैसे कमल होत परफुलित देखत दरमन भान ।
 'नूरदास' प्रभु हरिगुन मीठे नित प्रति मुनियत कान ॥

Questions

- 1—Point out the **भाव** in the above.
- 2—Find and Name the **अर्थकार** in the above.
- 3—Explain the above passage in simple Hindi.
- 4—Pick up a few words which are typical illustrations of **वचनमात्र**.
- 5—Compare the language of the above quotation with that of the lines of piece 29.
- 6—Write a simple essay on 'गुरु-साहित्य' ।



For Class XII.

(१)

वीहड़ वन है, सारे वन में कण्टक पूर्ण वृक्ष खड़े हैं। झाड़ियाँ इतनी घनी हैं कि पुराने मार्ग बन्द हो गये हैं। जंगल को देखकर प्रतीत होता है कि यहाँ अस्तित्व के लिए भीषण संग्राम (struggle for existence) हो चुका है। उसी जंगल के बीच में एक स्थान पर कुछ-कुछ खुली जगह है, यहाँ पर झाड़ियाँ नहीं हैं, एक छोटा-सा गोलाकार मैदान है। उस पर हरी-हरी दूब लगी है। इधर-उधर एकाध छोटे पौधे भी लगे हैं; किन्तु बीच में एक बड़ा वृक्ष खड़ा है। उसके मस्तक पर एक ही सुन्दर फूल खिला है। वृक्ष बहुत ऊँचा है। पुष्प पूर्ण विकसित होने पर भी पूरा खुला हुआ नहीं है; मानों उच्च स्थान पर स्थित होने के कारण सकुचा-सा रहा है। उस पुष्प से अतीव मनोहारी भीनी-भीनी सुगन्ध बह रही है। इस सुगन्ध से वह स्थान ही नहीं, सारा जंगल सुवासित हो रहा है। उस जंगल में प्रवेश करते ही वह सुवास प्रत्येक पथिक तक पहुँच जाती है और एक अज्ञात शक्ति बल से वह स्थान तक खिंचा चला जाता है। परन्तु उस स्थान विशिष्ट तक पहुँचने में उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मार्ग में घनी झाड़ियों का उल्लंघन करके उनसे बच कर ही वहाँ पहुँच पाता है। किन्तु इन सब

नन्दार में ज्ञान की उत्पत्ति आश्चर्य से है। जब कोई मनुष्य किसी वस्तु, विचार आदि को देखता सुनता है और उसे नहीं जान पाता तब उसके चित्त में या तो आश्चर्य का भाव उदित होगा अथवा उदासीनता का। उदासीनता के दरावर हानिकारक भाव नन्दार में नहीं है। यह विद्या, उन्नति आदि सभी गुणों की दायक है। अज्ञानी के लिये उदासीनता से इतर दूसरा भाव आश्चर्य का है। किसी अज्ञात पदार्थ को देख कर मनुष्य को बहुत कुछ सोचना चाहिये। इसके क्या गुण दोष हैं, यह क्यों कर बना, क्यों बना, इनके अन्तित्व का क्या कारण है, इसके अनन्तित्व से क्या हानि अथवा लाभ है, इत्यादि इत्यादि। अनेकानेक प्रश्न प्रत्येक अज्ञात वस्तु के विषय में उत्पन्न होते हैं। मूर्ख लोग बहुत से पदार्थों को उपहासात्सद् समझते हैं। संसार में कुछ पदार्थ उपहासात्सद् भी होते हैं किन्तु बहुतायत से नहीं। बहुत वस्तुओं का बाहरी भाव सही है तबने योग्य समझ पड़ता है, किन्तु भीतर घुस कर ध्यान पूर्वक देखने से उसी में कर्त्ता का भारी चातुर्य दिखाई देने लगता है। इसलिये जो लोग अनेकानेक वस्तुओं को भौड़ी, बंहील, और निन्ध समझते हैं, वे बहुत जल्द विचारों में अपनी ही मूर्खता प्रगट करते हैं। इससे भेद अहंकार के कारण बहुत से लोग परगुण-निरीक्षण में अन्ध होते हैं जिस किन्तु को नन्दार में अधिकार लोग एवं

एक विरहिणी अशोक को देखकर कहती है—तुम रहे हो, लतायें तुम पर बेतरह छाई हुई हैं; कलियों के गुन्दों में कहीं लटक रहे हैं; भ्रमर के समूह जहाँ-तहाँ गुथार कर बैठे। परन्तु मुझे तुम्हारा यह आह्वय परमन्द नहीं। इसे हृदयों मेरा प्रियतम मेरे पास नहीं। अतएव मेरे प्राण कण्ठगत होते हैं। इस उक्ति में कोई विरोधता नहीं। इसमें कोई चमत्कार और अतएव इसे काव्य की पदवी नहीं मिल सकती। अब ल चमत्कार-पूर्ण उक्ति मूढिये। कोई वियोगी रक्तारोक को देखकर कहता है—नवीन पत्तों में तुम रक्त (लाल) हो रहे हो, प्रियतम के प्रशमनीय गुणों में मैं भी रक्त (अनुरक्त) हूँ। तुम एक शिलीमुख (भ्रमर) आ रहे हो, मेरे ऊपर भी मर्ममित्र के स्पर्श से छूटे हुए शिलीमुख (बाण) आ रहे हैं। कान्हा के बालों से स्पर्श तुम्हारे आनन्द को बढ़ाता है, उसके स्पर्श में मुझे परमानन्द होता है, अतएव हमारी तुम्हारी जानों की अस्मिता पूर्ण-पूर्ण ममता है। अब यदि कृप है तो इतना ही कि तुम अशोक हो और मैं मशोक। इस उक्ति में मशोक का स्वार्थ में विशेष चमत्कार आया। इसने 'अतएव' का काम दिया। यह चमत्कार हिन्दी विश्वमहाकाव्य का प्रथम है और न हिन्दी का स्वतंत्र विशेषक काव्य के नियम का अंग है।

Questions

- 1—Explain fully the parts underlined.
- 2—Bring out clearly the context of the above passage.
- 3—Give the substance of the above in not more than four lines.
- 4—Point out the रस in the above.
- 5—Pick up the Alankars in the above and name them.
- 6—Change the following into words of Brjhaspa —
'सुख' 'सचक', 'दारी' and 'हर'।

(१६)

पुलको को बहुत नहिना है। इनकी रूपा से चाहे ननानन
 द्वारा कला वाले बहुत प्रभा की क्या उपनिषदों में देव पवित्र
 चाहे भगवान् वाग्मीके को पनीन गिरा की पवित्र मरिता में
 न कर दोनों लोक को नन्पादन करें। चाहे रनिक शिरोमणि
 व जो के प्रेम और भक्ति ने पूरा गीत गोविन्द को पद
 न कृपा की भक्ति करें। चाहे श्री मूरदास जी के भक्ति
 में भरे वृद्ध नरोवर ने नजन करें। चाहे दुष्यन्त के
 नन नपावन ने जा तन्विनी कन्याओं ने प्रानेध सत्कार
 इन अभाग्य कलियुग में ननयुग अन्ध सत्कार को
 चाहे पुरुरवा के उक्त प्रेम का रस देव उनका
 को नराहे। चाहे यज्ञ की पवित्र आकाश

- 2—What is घोर रस ? Point out the रस in the above.
- 3—Explain fully the parts underlined.
- 4—Write short notes on 'पुस्तक', 'माघ', 'चारुव्य', 'दिलीप' and 'दण्डी' ।
- 5—Pick up the Alankars and name them
- 6—What is 'गद्य' ?
- 7—Differentiate between 'प्रेम' and 'भक्ति' ।

(१३)

मागन्धी —(आँख खोल कर और पैर पकड़ कर)—प्रभु, आ गये ! इस प्यासे हृदय की तुष्णा मिटाने को अमृत-स्रोत ने अपनी गति परिवर्तित की ! इस मरुदेश में पदार्पण किया !

गौतम—मागन्धी, तुम्हें शान्ति मिलेगी । जब तक तुम्हारा हृदय उस विभूद्गला में था, तभी तक यह विडम्बना थी ।

मागन्धी—प्रभु ! मैं अभागिनी नारी, केवल उस अवज्ञा की चोट से बहुत दिन भटकती रही । मुझे रूप का गर्व बहुत ऊँचे चढ़ा ले गया था, और अब उमने उतने ही नीचे पटका ।

गौतम—क्षणिक विश्व का यह कौतुक है देवि ! अब तुम अग्नि से तपे हुए हेम की तरत शुद्ध हो गई हो । विश्व के कल्याण में अग्रसर हो । असंख्य दुःखी जीवों को हमारी सेवा की आवश्यकता है ; इस दुःख-समुद्र में कूद पड़ो । यदि एक भी रोंते हुए हृदय को तुमने हँसा दिया तो सहस्रो स्वर्ग तुम्हारे अन्तर में विकसित होंगे । फिर तुमको परदुःख कानरता में ही आनन्द

मिलेगा । विरव मैत्री हो जायगी, विरव भर अपना कुटुम्ब रिक्त पड़ेगा । उठो, असंख्य आहें तुम्हारे उद्योग से अद्रहाम में परिणत हो सकती हैं ।

Questions

- 1—Write short notes on 'मगन्धी' and 'गौतम' ।
- 2—How did Gautama brought Magandhi round?
- 3—Explain fully the parts underlined
- 4—Point out the 'रस' in the above
- 5—Pick up the Alankars in the above
- 6—Give the antonyms of 'तृष्णा', 'गर्भ', 'कल्याण'-शैली and 'स्वर्ग' ।

(१४)

आर्य जाति में यद्यपि सुधारकों ने समय-समय पर दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया, परन्तु शृङ्गार-रस का विकृत भाव बदलने में वे समर्थ नहीं हुए । पहली शताब्दी में लेकर दूसरी शताब्दी तक जितने कवि हुए, इनमें से अधिकांश ने शृङ्गार रस को ही प्रधानता दी और बहुतों ने तो अरलील वर्णन करने में भी कोई कमर न छोड़ा । कालिदास, भारवि, भवभूति, बाण आदि ने तो शृङ्गार वर्णन किया ही था, परन्तु भास्कराचार्य ने लीलावती जैसे गणित-ग्रन्थ में भी शृङ्गारिक उदाहरणों की भरमार कर दी थी । हममें पता लगता है कि तत्कालीन मानव-समाज की रुचि फिर जा रही थी । इस प्रकार शृङ्गार में डूबे हुए राज-समाज में चित्रित्व का लोप होना स्वाभाविक ही था । त्रिमका प्रत्यक्ष

उदाहरण पृथ्वीराज है। उसे अपने जीवन में दो ही कार्य पड़े; नानो काम-स्तोत्रुप होकर विवाह के लिये यत्र-तत्र युद्ध करना, अथवा शिकार खेलना। देश और राज्यों के प्रचण्ड में बहुत कम रुचि देखी जाती थी। इन विवाहों के कारण आपस की कूट होना स्वाभाविक ही था, जिससे विदेशियों को हमें पददलित करने का अन्धा अवसर मिल गया और शताब्दियों के लिये दानता गले पड़ी। पृथ्वीराज-गर्भी के पढ़ने में स्पष्ट विदित होता है। कि उक्त दोनों भावनाएँ राज समाज में किन प्रकार आत-प्रात थी। समाज उसके कारण किन प्रकार द्विज-द्विज होकर दुर्दशा को प्राप्त हुआ, इतिहास पढ़ने वाले यह भली भाँति जानते हैं। 'रासो' जैसे महाकाव्य में आधे से ज्यादा वर्णन स्त्रियों में सम्बन्ध रखता है। उसके पश्चात् कितने ही वीर-काव्य भी रचे गये पर उन सब में एक शृङ्गार का पद अवश्य दिया गया था।

Questions

- 1—Differentiate 'दर्शेल' and 'शृङ्गार रस'। When 'शृङ्गार रस' can degenerate into दर्शेल।
- 2—Write short notes on कालिदास, भारवि, भवभूति and धातु and give their origin.
- 3—Give the two divisions of 'शृङ्गार रस' and differentiate it from 'स्वार्थी भाव'।
- 4—Explain the parts underlined
- 5—What particular period of our history was most affected by 'शृङ्गार रस' in the history of literature?

६ - What were the chief occupation of 'पूषीस' ?
Why did he come to all these ?

(१५)

हम जान की जान इतनी बड़ी है कि परमात्मा को लोग जि-
कार कहते हैं तो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाये रहते हैं।
वेद ईश्वर का वचन है, 'कुरुआन शरीर कलामुत्तम, यह
विश्व बड़े आक गीड़ है' यह वचन, कलाम और बड़े जान ही है
पर्याप्त है जो प्रत्यक्ष में मुख्य के बिना स्थित नहीं कर सकती। जो
जान की मजिमा के अनुसार में सभी धर्मावलम्बियों ने गिरि
बानी बना यह यागी बानी जान मान रखी है। यदि कोई
मान तो आत्मा जान बना के मानने पर कटिबद्ध रहते हैं। यानी
हि प्रेम मिद्वान्नी लाग निश्चय के नाम में निश्चयों। "अपने
बानी बननी गुरुत्व" पर हट करन जान का यह कहते बने में
हल दगे कि "हम लोग लगे हमारा ग्यार ना बाह काम गुरु
ग्यारम बना गिरिग है"। निगहार गुरु का अर्थ या गुरुगुरु
गुरुग है जो हमका ग्यारमना का गानन करनी है अथवा गानन
का अर्थम करन जान का अर्थम में हल वा या गुरुग गुरुग है
है यह निश्चय अथवा निश्चय बना रहा है। गानन वा गुरु
गुरुग गुरुग का अर्थ गान गानन गुरु अथवा गुरु गानन गुरुग,
गुरुग गुरुग अथवा गानन वा गानन का हम गान में गान गान
गान गान है गुरु गानन गानन गानन गानन गानन गानन

करने देंगे, जब परमेस्वर तक बात का अभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही ? हम लोगों के तो 'गात नाहिं बात करा-
नात है' । नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोष इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक-एक बात ऐसी पाई जाती है जो मन, बुद्धि और चित्त को 'अपूर्व दशा' में ले जाने वाली अथवा लोक परलोक में सब बात घनाने वाली है ।

Questions

- 1—What is 'प्रेम रस' ? What is its स्थायी भाव ?
- 2—Explain the underlined parts.
- 3—Pick up the Alankar in the above and name them.
- 4—Comment on 'इंवर निराकर है' ।
- 5—Differentiate amongst 'मन, बुद्धि and चित्त' ।
- 6—Change the following words into those of 'गद्दी बोली':—'लाखों', 'कानों', 'भानों', 'घाँवों', and 'दोनों' ।

(१६)

बुलना—(प्रवेश करके चरण पकड़ती है)—नाथ ! मुझे निश्चय था कि वह मेरी उदरुहता थी । वह मेरी कूट-चातुरी थी, दुष्म का प्रकोप था । नारी-जीवन के स्वर्ग से मैं वञ्चित कर दी गई । ईद पत्थरों के महल रूपी चन्द्रीगृह में मैं अपने को धन्य समझने लगी थी । दण्डनायक 'मेरे शामक' क्यों न उसी समय, शील और विनय के नियम-भङ्ग करने के अपराध में मुझे आपने दण्ड दिया ! क्षमा करके महन करके, जो आपने

के कारण असम्भव भी हो जाता है। ऐसी बातों के विषय में हृद् इच्छा होने पर भी वे पूर्ण नहीं हो सकतीं उस समय केवल एक परमात्मा का आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु प्रायः सर्वसाधारण लोगों के स्वभाव सूक्ष्म अवलोकन किया जावे तो मालूम होगा कि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में ऐसी ही इच्छाएँ उत्पन्न हुआ करती हैं जो उसके जीवन में कभी न कभी उद्योग करने से पूर्ण हो सकें। यत्कि यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि हम लोगों में जो इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं वे इस बात की पूर्व सूचनाएँ हैं कि प्रयत्न करने से हम उनको सफल कर सकते हैं। परन्तु स्मरण रहे कि हमारी सभी इच्छाएँ सफल न होती, ईर्ष्यालिये हृद् इच्छा की अत्यन्त आवश्यकता है। सम्पत्ति-शास्त्र इच्छा के दो विभाग किये जाते हैं उनमें से एक को कार्य-क्षम इच्छा कहते हैं। यदि इच्छा कार्य-क्षम अर्थात् हृद् नहीं हो तो इस जीवन-संसार में मनुष्य का कोई व्यवहार सफल न होगा। हमारा इच्छा-तन्तु विघ्न-बाधाओं के एक ही भटके में टूट जायगा। हृद् इच्छा-शक्ति वही है जिसके प्रभाव से हम अपने संकल्पित कार्य की सिद्धि के लिये आत्म समर्पण कर दें, किसी अड़चन, विघ्न या बाधा की परवाह न करें, किसी भी कारण से पीछे न लौटें, किन्तु अपने हृद्-कार्य में तन, मन, धन, से सदा प्रयत्न करते रहें। इच्छा-शक्ति की दृढ़ता से मनुष्य अद्भुत कार्य कर जानता है।

ना देशभर को आक्रमण किये हैं। हमारे पूर्वज प्रकृति को
लेड़ना नहीं पसन्द करते थे, वरन् प्रकृति में विकृत भाव बिना
लाये सद्गम में जो कान हो जाता था, उन्हीं पर चित्त देते थे।
आधुनिक नभ्यता जो विदेश से यहाँ आई है, हमारी किसी बात
के अनुकूल नहीं है; किन्तु इतने प्रतिदिन हमारी सीखता होती
जाती है। भोग-विलास आधुनिक नभ्यता का प्रधान अङ्ग है।
दौड़ का विलाना होना अपना नाश करना है।

Questions

- 1—Comment on गौरव या गौ-राजन यहाँ की सभ्यता का धेड़
का है।
- 2—Differentiate between 'समय' and ईश्वर।
- 3—Pick up the Alankars in the above.
- 4—Point out the रस in the above
- 5—Explain the parts underlined
- 6—Give the antonyms of 'आधुनिक', 'अनुकूल', 'सभ्यता'
and 'दुष्ट'।

(१६)

राजः—हम तेरा मतलब समझ गये। अच्छा तो सुन—हम
जवन में जो नियम देंगे हुए हैं उनमें लिखा हुआ है कि किसी
भी कर्मचारी को इनाम न दिया जाय, पर तूने हमसे इनाम ले
लिया है। पैना ताँबे का पैना लिया, बैस्ता चाँदी का रुपया लिया।
इसलिये तूरे मना और ईश्वर को धन्यवाद दे कि हम तेरी
रिपोर्ट नहीं कर रहे हैं। जानता है, राजा दुर्गावती का राज्य है

इसमें नियम तोड़ना तो क्या, न तोड़ना भी अपने ऊपर खर्च लेना है। (फटकारते हुए) जा भाग जा। (माली जाता है, दुःख में को ध्यान में देखता हुआ) रानी के शासन की प्रशंसा मरीम्मी इसकी सुगन्धि दूर ही से अच्छी लगती है। इसका हमारा देश जैसा सुन्दर है, इसके कोंटे कानून को धाम में हैं, इसकी पत्तियाँ मुकदमों की मिमले जैसी हैं, इसका हँस गूँहा-गूँहा बकील की तरह दिखाने देता है।

Questions

1. Write a short note on दुर्गावती। Why she is worthy of the name?
2. Find out the points and related.
3. Point out the 'म' in the above.
4. Find out the 'अ' and 'क' in the above.
5. Give a short note on रानी, चम्पदा, शासन, पत्तियाँ and मुकदमा।

(३५)

परिचय—राष्ट्रमूर्ति, राष्ट्रनिर्माता और कानून का संरक्षक
है। इस कानून व्यवस्था की सम्मति सभी कानून रखते हैं।
एक सम्मति का उद्देश्य है कि इस कानून का अर्थ, इसका अर्थ जो है
होना है। यह इस कानून का अर्थ है कि यह कानून कानून
है, कानून कानून कानून का व कानून कानून कानून
कानून कानून कानून कानून कानून कानून

5—Explain the parts underlined.

6—Give the antonyms of कल्पना, प्रयत्न, प्रेरणा व आक्रमण

(२१)

तू तो केवल दो-चार बाहरी अपुरी बातों के आगर पर ही
 सुधार की हलचल मचा रहा है। तू अपने छाँटे से बन्द कमरे में
 भीतर बैठा हुआ, मिड़की में ही, समस्त प्रमाणों की जाँच
कर रहा है। कभी-कभी तो विवि-विधान की भी तुझे
कर बैठता है। कपोल-कल्पनाओं की कभी नींव पर तर्जनी
के निर्माण का आयोजन करना तो तेरा महज व्यवसाय है। तर्जनी
भी पड़ता पर तू अपने गूढ़ व्यक्तित्व की छाप लगा देता है।
यह नहीं समझता कि इसमें सुधार हागा या बिगाड़। तू
अपने सुगर के उल्लेखार्थिक में परिचित हाता तो अपने
वार्तिकवादी के उजाड़ देने की कभी दृष्टि न रख, तू
अपना ही परिचित-गुण अपने को बढ़ाने का जवा, तू
भी कर्तव्य की जड़ों में न उड़ल देता, मौलिक सुधार
की मूल्य मानने वाली के पैरों के तले न तुल्य है, तू
अपनी ही कामल कलेवर का भाव के साथ कर्मरत हाता
में कर्मरत न रहता, महज सामाजिक, कल्पना का हाता
अपने नृति पर हाता न रहता, आत्मन हाता न
अपने पर हाता की हाता में अर्थात् न हाता न हाता।

शुद्ध ध्वनता सम्भवती यो काली-कलटी ग्राही पट्टिना कर नर्तकी
यो नगद गली-गली नचाना ही फिरता ।

Questions

- 1--Prove that 'Reform can only be made before one is mended according to it.'
- 2--Give a short criticism of the above.
- 3--Differentiate between 'महाण्ड' and 'विश्व' ।
- 4--Point out the रस in the above.
- 5--Pick up the Alankars in the above.
- 6--Explain fully the underlined

(२२)

किसी ग्रन्थ की आलोचना करने के समय हम उस ग्रन्थ और उसके कर्ता का सामाजिक आधिपत्य समझना चाहते हैं, और यह हमारे सम्बन्ध में अपनी कोई सम्मति स्थिर करना चाहते हैं । दूसरे ने किसी ग्रन्थ या उसके कर्ता की जो आलोचना की है, हमने भी हम लाभ उठा सकते हैं; पर वह लाभ उतना अधिक और सामाजिक नहीं है जितना स्वयं अध्ययन करने से होता है, क्योंकि हम वहाँ से हम उस आलोचक के विचारों में प्रभावान्वित हो जायेंगे और अपनी निज की कोई सम्मति स्थिर करने में असमर्थ होते । हाँ, अपनी आलोचना में हम दूसरे आलोचकों के अध्ययन और आलोचना से कुछ लाभ उठा सकते हैं । यदि कोई अपना कवि जीवन की व्याख्या करता है, तो एक अपना आलोचक हमें वह व्याख्या समझाने

में सहायक होता है। कोई अच्छा आध्यात्मिक साधक कभी
की अपेक्षा अधिक ज्ञान-सम्पन्न होता है, उसका अध्ययन के
अधिक गम्भीर और पूर्ण होता है और इसलिये वह किसे
कवि या लयक की कवि क मित्र मित्र अंगों पर प्रकाश दार का
हम अनेक नई बातें बतलाता और अनेक नये मार्ग दिखाता है।
वह हमारे मार्ग में एक अच्छे मित्र और एक दुर्गन्ध का कारण
है। वह हमें सिखाता है कि अध्ययन किस प्रकार करने का
और अपने स्थान पर करना चाहिये। चाहे उसकी सम्पत्ति को
निर्माण में हम सहमत हो और चाहें न हो, पर इसमें सन्देह नहीं
कि उसकी आत्मा-बला में हम बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं जो
हमारा ज्ञान बहुत कुछ बढ़ सकता है।

Questions

1. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
2. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
3. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
4. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
5. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
6. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
7. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
8. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
9. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?
10. 'अपने स्थान पर' का अर्थ क्या है ?

(३)

इसके बाद हमें अपने अपने कामों में लगे रहना चाहिये।
हमें अपने अपने कामों में लगे रहना चाहिये।

तोरों का मान, मूर्ति पूजन आदि हिन्दू-धर्म के सिद्धान्तों का दोनों के हृदय में आदर था। दोनों के धार्मिक विचार एक ही से थे। अतः यहाँ उनका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। इतना अन्तर उल्लेखनीय है कि केशव ज्ञान-मार्ग के तथा तुलसी भक्ति-मार्ग के पक्षपाती और अनुयायी थे। केशव में अपनी जाति का बहुत पक्षपात दिखाई पड़ता है। यदि निम्नलिखित पद्य नहीं का है तो इसमें वे बड़े अनुदार तथा पक्ष-पाती निरुद्ध होते हैं। उनका गुण-वर्णन करते हुए वे कहते हैं—“छाँड़ि ऋषि द्विज वि ऋषिराज सब मुख पार प्रगट सकल सनौदियन के पूजे पाय।” तथा रामजी के समय में भी सनाढ्य आदि भेद थे? तुलसीदास ने संकीर्ण-हृदय न थे। उन्होंने अपने किसी विशेष जाति के होने को जरा भी महत्व नहीं दिया—“राजपूत कहौ जुलहा कहौ कोई, धूत कहौ अवधूत कहौ।” गोसाईंजी—जाति पाँति धन धरमु बड़ाई।” आदि सब बातों से ऊँची एक बस्तु मानते थे और वह थी “राम-भक्ति”। पतिव्रत धर्म के विषय में दोनों के एक से विचार थे। दोनों ही कवियों में विश्व-प्रेम तथा देश-भक्ति का अंकुर था। भारतवर्ष की राष्ट्रीयता तथा उनकी एकता का दोनों का ज्ञान एवं अभिमान था। अपने ग्रन्थों में उन्होंने भारतवर्ष के सम्मान का पूज्य दृष्टि से अनेकों जगह उल्लेख किया है।

Questions

1. the views of both the poets in the above.

निबन्धों के विषय

—अन जीवन का महत्व ।

—मौका की यात्रा ।

—यूरोप में नशापुष्ट ।

—मोहन का परिनाम ।

—विदेश भाषा में लान ।

—भारतवर्ष के लिये हिमालय पर्वत का महत्व ।

—अन धनुष की छत्रा का वर्णन ।

—अन परिवर्तन ।

—कविता और हनु ।

—अन का नुस्ख ।

—कविता ।

—अन ।

—अन के अनिवार्य गुण ।

—अन का नुस्ख ।

—अन के अनिवार्य गुण ।

—अन के अनिवार्य गुण ।

—अन के अनिवार्य गुण ।

—अन के अनिवार्य गुण ।

—अन के अनिवार्य गुण ।

४०—किसी घटना का वर्णन ।

४१—अंगरेजों व हिन्दुस्तानियों के समाजों का भेद ।

४२—नाटक या थियेटर ।

४३—इतिहास-पठन ।

४ —शालिचर-शिक्षा ।

४५—सदाचरण ।

४६—मत्स्यवादिता ।

४७—हस्त कौशल या कारीगरी ।

४८—छुट्टियों के समय का उचित उपयोग ।

४९—स्वदेश-प्रेम ।

५०—प्रकृति-निरीक्षण ।

५१—विमान की उपयोगिता ।

५२—गुरुभक्ति ।

५३—पवित्रोद्धार ।

५४—खुले मैदान की पढ़ाई ।

५५—एक घूँट पानी की आत्म-रक्षानी ।

५६—कौनसा बड़ा आविष्कार है—लिखना या छापना ।

५७—"हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है" ।

५८—वर्तमान कृषि-विद्या में उन्नति की आवश्यकता ।

५९—"साहित्य की उन्नति और कविता का दान माथ-माथ चलते हैं" ।

६०—मूर-साहित्य में तुलना-साहचर्य क्यों अधिक लोचनीय है ?

निबन्ध के उदाहरण

(१)

उपन्यासों का पढ़ना लाभदायक है या हानिकारक है ?

ढाँचा (Outline of the Essay)

१—लक्षण, प्रयोजन, सदाचार और शिक्षा ।

२—दृष्टान्त की आवश्यकता ।

३—उपन्यासों के दोष ।

४—उपन्यासों का वर्तमान प्रचार ।

५—अधिक पढ़ने की हानि ।

६—बंकिमचन्द्र चटर्जी और उपन्यास सम्राट् बाबू प्रेमचन्द्र जी ।

७—उपन्यास पढ़ने के लाभ तथा हानियाँ और परिणाम ।

काल्पनिक कहानियों को उपन्यास कहते हैं। उपन्यास कई प्रकार के होते हैं। कुछ तो ऐतिहासिक उपन्यास हैं, जिनमें किसी एक ऐतिहासिक घटना के आधार पर एक कहानी गढ़ ली जाती है। इसमें कुछ घटनायें तो उमी प्रकार वर्णित होती हैं, जिन प्रकार वे हुई हों, परन्तु कुछ अपनी ओर से गढ़ ली जाती हैं। उपदेश सम्बन्धी उपन्यास वे हैं, जिनके द्वारा लेखक कुछ उपदेश देता है। ये उपन्यास किसी धार्मिक शिक्षा को लेकर

१. म. व. ११। नाभी वाकल म 'च' की, 'मिमरी'
 २. १२। १३। म. व. १४। म 'म' की—केवल एक
 ३. १५। १६। १७। दान दुर्गा' में 'द' और 'स'
 ४. १८। १९। २०। गड है।

१. २१। २२। २३। यलहार म एक अथवा अनेक
 २. २४। २५। आगत नहीं है उसे वृत्तनुयाम

१. २६। २७। २८। गड मार केयो वा।
 २. २९। ३०। आगत दूड है।

१. ३१। ३२। ३३। यलहार म एक या अनेक
 २. ३४। ३५। ३६। अथ म पान्नु निश
 ३. ३७। ३८। ३९। है उसे काटनुयाम

१. ४०। ४१। ४२। दन हरि गान।
 २. ४३। ४४। ४५। दन हरि गान॥
 ३. ४६। ४७। ४८। दन हरि गान॥
 ४. ४९। ५०। ५१। दन हरि गान॥
 ५. ५२। ५३। ५४। दन हरि गान॥
 ६. ५५। ५६। ५७। दन हरि गान॥
 ७. ५८। ५९। ६०। दन हरि गान॥

असम्भव कही गयी है। यहाँ अन्युक्ति अलंकार है। (इसमें सर्वथा मिथ्या वर्णन होता है) ।

८—अर्थान्तरन्यास

जिस अलंकार में सामान्य बात का विशेष द्वारा और विशेष बात का सामान्य द्वारा समर्थन किया जाता है उसे अर्थान्तरन्यास अलंकार कहते हैं ।

उदाहरण—

बड़े न हूँ गुननि धिनु, विरद बढ़ाई पाय ।

कहत धनूरें सो कनक, गहनो गह्यो न जाय ॥

इस छन्द में प्रथम तो यह साधारण बात कही है कि बिना गुणों के केवल बड़ा नाम पाने में कोई बढ़ा नहीं हो सकता । फिर इस साधारण बात का समर्थन करने के लिये यह विशेष बात कही गयी है कि धनूरें का नाम कनक (सोना) भी सही परन्तु उसमें गहना नहीं बन सकता । यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है ।

९—अपह्नुति

जिस अलंकार में उपमेय (जिस वस्तु का वर्णन हो रहा है) का निषेध करके उपमान (अन्य वस्तु) को मचा मान लिया जाता है उसे अपह्नुति अलंकार कहते हैं ।

उदाहरण—

ये नहि फल गुलाब के दाहन हिय जु हमार ।

बिन बनम्याम अराम में, लागि दुमह द्वार ॥

इस छन्द में 'गुलाब फूल' (उपमेय) का निषेध करके "द्वार" (उपमान) को सच्चा माना है। यह अपहृति अलङ्कार है।

१०—व्याजस्तुति

जिस अलङ्कार में निन्दा के भिन्न से स्तुति और स्तुति के भिन्न से निन्दा का तात्पर्य होता है उसे व्याजस्तुति अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण—

सेनर ! तेरो मान्य यह, कहा सराखो जाय ।

पक्षी कर फल आश जो, तुहि सेवत निव आय ॥

इस छन्द में सामान्यतया सुनते में सेनर वृद्ध की प्रशंसा जान पड़ती है परन्तु है बाल्य में है उनकी निन्दा। यह व्याजस्तुति अलङ्कार है।

११—दृष्टान्त

जहाँ उपमेय और उपमान वाक्यों तथा उन दोनों के धर्मों में दिग्दृष्ट-प्रतिविम्ब भाव हो।

उदाहरण—

भरतहि होइ न राज मर, विधि-हरि-हर-पद पाइ ।

कबहुं कि कौन-सी करनै, छोगमिन्धु दिननाइ ॥

इन दोहे में एवम् उपमेय वाक्य है और उत्तरार्द्ध उपमान वाक्य पहले का अर्थ 'विधि हरि-हर-पद पाकर' इत्यादि न

असम्भव कही गयी है। यहाँ अन्युक्ति अलंकार है। (इसमें सर्वथा मिथ्या वर्णन होता है)।

८—अर्थान्तरन्यास

जिस अलंकार में सामान्य बात का विशेष द्वारा और विशेष बात का सामान्य द्वारा समर्थन किया जाता है उसे अर्थान्तरन्यास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण—

बड़े न हूँ गुननि विनु, विरद बड़ाई पाय।

कहत धनूरें सो कनक, गहनो गहयो न जाय ॥

इस छन्द में प्रथम तो यह साधारण बात कही है कि बिना गुणों के केवल बड़ा नाम पाने में कोई बड़ा नहीं हो सकता। फिर इस साधारण बात का समर्थन करने के लिये यह विशेष बात कही गयी है कि धनूरे का नाम कनक (सोना) भी नहीं परन्तु उससे गहना नहीं बन सकता। यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

९—अपह्नुति

जिस अलंकार में उपमेय (जिस वस्तु का वर्णन हो रहा है) का निरोध करके उपमान (अन्य वस्तु) को सषा मान लिया जाता है उसे अपह्नुति अलंकार कहते हैं।

उदाहरण—

ये नहीं फूल गुलाब के, दाहन हिय जु हमार।

बिन पनस्याम अराम में, लागि दुसह द्वार ॥

इस वृत्त में सुगम वृत्त (जनमे) का निर्देश करने
 के लिए (जनमे) को कहा गया है। यह व्याख्या
 बतलाने है।

१०—व्यावृत्ति

जिन व्यक्तियों में निम्न के निम्न में सुवि और सुवि के
 निम्न में निम्न का वर्णन होता है उसे व्यावृत्ति कहते हैं।

उदाहरण—

सेनर ! तेरी आज यह कहा गया है ।
 पक्षों पर एक जगह से, तुम्हें केवल निम्न आप ॥
 इस वृत्त में निम्न-निम्न, तुम्हें में सेनर वृत्त की प्रशंसा करने
 पक्षों में पक्षों में वास्तव में है जगह निम्न । यह व्यावृत्ति
 बतलाने है ।

११—वृत्तान्त

जहाँ जनमे और जनमे वास्तव में एक जगह दोनों के दोनों में
 निम्न-निम्न-निम्न माने हो ;

उदाहरण—

नरतारि होय न राज नद, निम्न-निम्न-निम्न पक्ष ।
 कष्टों से कष्टों-कष्टों, कष्टों-निम्न निम्न ॥
 इस वृत्त में निम्न-निम्न माने जाय है और निम्न-निम्न
 पक्ष । पक्षों का अर्थ निम्न-निम्न-निम्न पक्षों की प्रशंसा करने

(६) भयानक

(अ)

शिखरिं शम्भु गण करहि गृह्वारा ।
जरा मुकुट अहि मौर सँवारा ॥
कुरङ्गल कंकण पहिरे व्याला ।
तन विभूति कटि केहरि छाया ॥

—तुलसीदास ।

(ब)

मागी लंका डर गई, देख देख हनुमान ।
अजब हठीले वीर की, बड़ी निराली शान ॥

(७) वीभत्स

(अ)

हाड़ मास लाला रक्त, बसा तुचा सब कोय ।
द्विज-भिन्न दुरगन्ध मय, मरे मनुष के होय ॥

—हरिश्चन्द्र ।

(ब)

मेर मज्जा की अलौकिक, थी वहाँ सरिता बही ।
शोणित पैला था वहाँ पर, और दूही थी कहीं ॥
पीय का मंता निराजा, चित्त चर्चित कर रहा ।
नरक के इस दृश्य में तो, शान जाना, पर रहा ॥

—मैथिलीशरण गुप्त ।

रीति यही करुणानिधि की 'कवि देव' कहें विनतीमोहि भावै ।
 चौंटी के पाय मे बाँधि गयंदहि चाहै समुद्र के पार लगावै ॥
 —देव कवि ।

रस नौ होते हैं किन्तु कोई-कोई आचार्य दसवों भी (वात्सल्य
 रस) मानते हैं और प्रत्येक रस का एक म्हायोभाव होता है ।
 जो निम्न लिखित हैं:—

१—शृङ्गार	प्रेम (या रति)
२—हास्य	हास्य (हँसी)
३—करुण	शोक
४—वीर	उत्साह
५—रौद्र	क्रोध
६—भयानक	भय
७—बीभत्स	घृणा
८—अद्भुत	विस्मय
९—शान्त	निर्वेद
१०—वात्सल्य	स्नेह

सचारी भाव ३३ माने गये हैं । उनके नाम ये हैं —

निर्वेद शंका मद मोह ग्लानि ।
 उन्माद आवेग विषाद हर्ष ॥
 क्रोडा अमूया अवहित्थ धैर्य ।
 चिन्ता अपम्मार विनर्त गयं ॥ १ ॥
 श्रीग्न्युक्त जाड्य स्मृति दैन्य श्रम ।
 विचाथ निद्रा मति व्याधि स्वप्न ॥
 आलस्य मृत्यु भ्रम वधना ये ।
 मञ्जारी वापन्य अमर्ष जानो ॥ २ ॥

छन्द-निरुपण

परिचय

मात्र, चरं, स्वतः, विभक्त, (चरं) और सामान्य
सम्बन्धी विभक्त विभक्त कहिये वे चरं कहें, उसे छन्द कहते हैं।

प्रत्येक छन्द के चार भग्न होते हैं, जिनमें से प्रत्येक को चर,
पद अथवा चरण कहते हैं। अतः प्रत्येक छन्द में चार चर, चर
अथवा चरण होते हैं।

जो छन्द दो पंक्तियों में लिखे जाते हैं, वय—दोहा, मोंगल
आदि, उनकी प्रत्येक पंक्ति को वृत्त कहते हैं।

भेद

छन्द दो प्रकार के होते हैं—

(१) मात्रिक अथवा चर छन्द।

(२) वारिक छन्द अथवा चर-वृत्त।

जिन छन्दों में पदों या दोहों की गणना मात्रिकों के हिसाब
से की जाय वे मात्रिक और जिनकी गणना अक्षरों के हिसाब से
की जाय वे वारिक छन्द कहलाते हैं। इनमें से प्रत्येक के तीन-
तीन भेद हैं—(क) मन, (ख) अर्द्धमन और (ग) विभक्त। जिन
छन्दों के चारों पद एक से हों वे मन जिनके चारों और दोनारे
तथा दूसरे और चौथे पद एक से हों वे अर्द्धमन और जिनके
चारों पद भिन्न-भिन्न हों वे विभक्त कहलाते हैं।

मन के दो भेद हैं—(१) सामान्य और (२)

जिन मात्रिक समों के प्रत्येक चरण में ३२ या इसमें कम मात्रायें होती हैं वे साधारण और ३२ से अधिक मात्रा वाले दंडक कहलाते हैं। इसी भाँति जिन वर्णिक वृत्तों के प्रत्येक चरण में ३६ या इससे कम अक्षर होते हैं वे साधारण और उसमें अधिक अक्षर वाले दंडक कहलाते हैं।

विराम (यति)

बहुधा छन्दों का प्रत्येक पद एक या अधिक स्थानों में टूटता है। जैसे—‘भे प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशलया हितकारी’। यह पद ‘कृपाला’ व ‘दयाला’ पर टूटता है। इसी टूटने अथवा पड़ते समय जिज्ञा रुकने के स्थान को यति, विराम अथवा विराम कहते हैं। इस ऊपर के पद को ऐसे भी कहा जा सकता है कि इसमें “कृपाला” और “दयाला” के बाद, यति तथा प्रारम्भ से १० और ८ मात्राओं पर यति है।

मात्रिक छन्द सम

१—चाँपाई

लक्षण—प्रत्येक चरण में १५ मात्रा हो, अन्त में गुरु और लघु हो।

उदाहरण—

हम चौधरी डोम सरदार,

अमल हमारा दोनों पार।

मन जटान पर हमारा राज,

कफन मॉगने का है काज॥

२—रोला

लक्षण—प्रत्येक चरण में ११ व १३ के विभ्राम से २४ मात्रा हों। किसी-किसी कवि के मत से इनके अन्त में दो गुरु होना आवश्यक है।

उदाहरण—

राम कृष्ण गोविंद भजे मुख होत घनेरो ।
 इहाँ प्रमोद लहन्त अंत बैकुण्ठ वसेरो ॥
 मृग वृष्णा सौ विपै, तुच्छ अति बंधन जी को ।
 तांत छोड़ि कुसंग, गहो शरणो हरि दी को ॥

३—गीतिका

लक्षण—१४ और १२ पर विभ्राम से २६ मात्रा हों, अन्त में लघु गुरु हों।

उदाहरण—

योग यक्ष अनेक कर्मन,
 करि तुन्हें सब ध्यावहीं ।
 होय जाको भाव तैसो,
 तुमहि ते फल पावहीं ॥
 अति अगाध अपार तुव गति,
 पार काहु नहि लखो ।
 मन जेज गगेश विधना,
 नान निगमन हू कह्यो ॥

मात्रिक अर्द्धसम छन्द

(१) वरवै

इस छन्द के विषम चरणों में अर्थात् प्रथम और तृतीय चरणों में १२ मात्राएँ होती हैं। सम चरणों में अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ चरणों में ७ मात्राएँ होती हैं। अन्त में लघु-गुरु-लघु (।।) होना आवश्यक है, जैसे—

केस मुकुत, सखि मरकत मनिमय होत ।

हाथ लेत पुनि मुकुता करत उदोत ॥

(२) दोहा

विषम चरणों में १३ मात्राएँ तथा समचरणों में ११ मात्राएँ होती हैं। अन्त में लघु होता है, जैसे—

तनभूषन, अंजन दगनु, पगनु महावर-रंग ।

नहि शोभा कौ सानिपतु, कहिबैं ही को अह्न ॥

(३) सोरठा

विषम चरणों में ११ तथा समचरणों में १३ मात्राएँ होती हैं। जैसे—

कुन्द-इन्दु-सम देह,

उमा रमन करुना अयन ।

जाहि दीन पर नेह,

करौ कृपा भर्दन भयन ॥

सर्वैया

२० से २६ अक्षरों तक का होता है,

मटिग भगण + १ गुरु (२०) अक्षर ।

छविन के प्रण युद्ध जुवा जुगि माजि चड़े गज वारिन ही ।
 वैश्य को धानिज और कृषीपन शूद्र के मंथन मात्र यही ॥
 विप्रन के प्रण है जु यही गुण सम्पनि मूं कजू कान नहीं ।
 कै पठिवा क नवाधन है कन मागिन विप्रन मात्र नहीं ॥

नम गायंद—२ भगण और २ गुरु (२३) अक्षर ।

पावन नृपुत्र मनु बने कटि किस्मिन् म सुनि की मनुगई ।
 मोकरे अंग लमै पद पात द्विप दलमै वनमाध मुदाई ॥
 माथे छिरीट बंद मग नयन मन होमा मुन वन्द मुदाई ।
 त्रै त्रग मन्दिर दीपक मन्दर धात्रत दुर्गादि नव मुदाई ॥

दुर्मिन्न—८ भगण (२२) अक्षर ।

मृत के पुन नानक मारनि की
 चहुँ आसन कारिहल दूखन म
 अनुगण मर हार बाधन म
 मरि मरण मग अनुदनि मा ॥
 दूख 'दूख' यश दुनई मुदाई,
 वन नूनि मई नव दूखि भे ।
 मग मरि हारि दूखनी कन,
 मरि नूनि मरी के मुदनि भे ॥

